नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

सड़कों को आवारा कुत्तों से मुक्त करने का फैसला

दिल्ली-एनसीआर में लगातार बढ़ते कुत्तों के काटने के मामले, रेबीज से मौतें और बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक पर होने वाले हमले अब सिर्फ एक स्थानीय समस्या नहीं, बल्कि एक गंभीर राष्ट्रीय चिंता बन चुके हैं. इस पृष्ठभूमि में भारत के सर्वोच्च न्यायालय का हालिया फैसला न केवल समयोचित है, बल्कि इसे सार्वजनिक सुरक्षा के लिहाज से ऐतिहासिक कहा जाना चाहिए.

कोर्ट ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि सड़कों पर कोई भी आवारा कुत्ता नहीं होना चाहिए. इन्हें शेल्टर होम में ले जाकर नसबंदी और टीकाकरण किया जाएगा, और फिर इन्हें दोबारा सड़कों पर नहीं छोड़ा जाएगा. साथ ही, डॉग बाइट शिकायतों के लिए हेल्पलाइन शुरू करने और 5,000 कुत्तों की क्षमता वाले शेल्टर होम बनाने का आदेश एक ठोस और व्यावहारिक समाधान की दिशा में बड़ा कदम है. यह निर्देश भी उल्लेखनीय है कि इस प्रक्रिया में बाधा डालने वालों के खिलाफ अवमानना की कार्रवाई की जाएगी,क्योंकि अक्सर अच्छी नीतियां जमीन पर 'सक्रिय विरोध' के चलते असफल हो जाती हैं.

इस आदेश को लेकर कुछ पशु अधिकार कार्यकर्ताओं की आपत्तियां स्वाभाविक हैं. मेनका गांधी जैसे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं का मानना है कि यह कदम पारिस्थितिक संतुलन को नुकसान पहुंचा सकता है,लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि 'संतुलन' तभी सार्थक है जब उसमें मानव जीवन और सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाए. जब मासूम बच्चे कुत्तों के झुंड के हमलों का शिकार होते हैं, जब रेबीज जैसी घातक बीमारी से हर साल सैकड़ों लोग मरते हैं, तब यह बहस 'भावनाओं' से आगे बढ़कर 'व्यावहारिक समाधान' की मांग करती है.सुप्रीम कोर्ट ने इस फैसले को जनहित में बताया है और यह भी साफ किया है कि इसमें भावनाओं का स्थान नहीं होना चाहिए. यही इस आदेश की सबसे बड़ी ताकत है कि यह मानवीय दृष्टिकोण और तर्कसंगतता, दोनों का संतुलन साधता है. शेल्टर होम, नसबंदी, टीकाकरण और प्रशिक्षित कर्मचारियों की नियुक्ति से न केवल इंसानों की सुरक्षा सुनिश्चित होगी, बल्कि कुत्तों को भी नियंत्रित और सुरक्षित वातावरण में रखा जा सकेगा.

आज जरूरत है कि इस पहल को सिर्फ दिल्ली-एनसीआर तक सीमित न रखा जाए. कुत्तों के काटने के मामले देश के हर हिस्से में बढ़ रहे हैं. राज्यों को भी इसी तरह की ठोस नीति बनाकर सख्ती से लागू करनी चाहिए. यह मामला 'मनुष्य बनाम पशु' की लड़ाई नहीं है, बल्कि 'सुरक्षा बनाम खतरे' का प्रश्न है.

सुप्रीम कोर्ट ने जो रास्ता दिखाया है, वह कठिन जरूर है, लेकिन यह एक जिम्मेदार और सुरक्षित समाज की ओर बढ़ने का रास्ता है. अब यह सरकारों और स्थानीय निकायों की जिम्मेदारी है कि इस आदेश को तात्कालिकता और संवेदनशीलता के साथ लागू करें, ताकि सड़कों पर खेलते बच्चे और घर लौटते बुजुर्ग बिना डर के जी सकें.

विभाजन विभीषिका

सत्तालोलुपता की पराकाष्ठा

आचार्य गौरव शर्मा

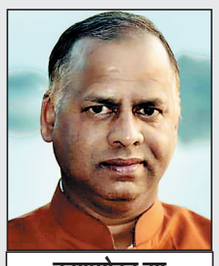

> 'समकालीन लोगों में समाजवादी चिंतक डॉ. राममनोहर लोहिया भी थे. वे विभाजन के प्रबल विरोधी थे, उनका मानना था, इस विभाजन से किसी भी समुदाय, हिन्दू और मुस्लिम, दोनों को हानि पहुंचेगी. वे सीधे तौर पर विभाजन के लिए कांग्रेस के बड़े नेताओं को दोषी मानते थे, खासकर नेहरू, गाँधी को. वे नेहरू को जहाँ सत्तालोलुप मानते थे, इसी के तहत नेहरू ने बंटवारे को स्वीकार किया. उन्होंने नेहरू पर कई तरह के आरोप लगाकर नेहरू को दोषी माना, वे नेहरू को बहरूपिया कहने से भी नहीं चूके, गाँधी को अनिश्चयी और दृढ़हीन व्यक्ति माना.'

हिंदुस्तान द्वारा स्वतंत्रता का मूल्य दो भागों में विभक्त अनिच्छित विभाजन के रूप में चुकाया गया था. एकता को कायम रखने के भरसक प्रयासों के उपरांत भी यह अखंडता अंनत छिन्न-भिन्न हो गयी और इतने विकृत अमानवीय रूपों और घृणित दुर्घटना के रूप में सामने आयी कि इससे निकलने वाले परिणाम बेहद दुखद निष्कर्षों पर पहुंचे. हिंदुस्तान की स्वतंत्रता का सुखद सपना विभाजन के भयावह परिणाम को प्राप्त होकर दुखद अंत को प्राप्त हुआ. उच्च पदासीन नेताओं की अदूरदर्शिता की भेंट वह सामान्य नागरिक चढ़ गया जो वस्तुस्थिति से सर्वथा अनभिज्ञ था.

भारतीय उपमहाद्वीप पर मुस्लिम हितों को सुरक्षित करने के उद्देश्य के साथ बनाया गया, उसी मुस्लिम लीग ने इस बात का राजनीतिक लाभ उठाया कि कांग्रेस की अदूरदर्शिता के कारण भारतीय मुसलमानों के मन में परसिक्यूशन मेनिया यानी कि सताये जाने की ग्रंथि ने जन्म ले लिया था. मुस्लिम शासकों ने भारत पर लंबे समय तक शासन किया था और इस दौरान उनके द्वारा जिन क्रूर कृत्यों को अंजाम दिया गया था और जिस प्रकार तलवारों के बल पर धर्म परिवर्तन करवाया गया, लंबा समय बीत जाने के पश्चात भी इन दुर्घटनाओं की छाप हिंदू जाति के मानस से मिट नहीं सकी थीं. वहीं दूसरी ओर मुस्लिम जाति के मानस में शासक होने के इतिहास की यादें अभी जीवित थीं और उनकी सामाजिक स्थिति जिस तरह प्राथमिक से द्वितीयक श्रेणी में आ गई थीं, उससे भी उनके भीतर रोष और प्रतिशोध भरा हुआ था.

स्वाधीनता आंदोलन के दौर में जिन राष्ट्रीय प्रतीकों का इस्तेमाल किया जा रहा, वे प्रतीक राष्ट्रीय कम, सांप्रदायिक अधिक थे. इससे मुसलमानों का चिढ़ जाना, उनमें धार्मिक आक्रामकता और अक्खड़पन का आ जाना स्वाभाविक था. हिन्दुओं, मुसलमानों के दिलों में दुबके हुए ये संस्कार और पूर्वाग्रह अंग्रेजों द्वारा हवा देने पर नई परिस्थितियों में जाग्रत और उत्तेजित होकर एक बड़ी हद तक देश के बंटवारे के लिए निर्णायक सिद्ध हुए.'

मुस्लिम लीग ने सांप्रदायिकता की राजनीति कर अपनी महत्वकांक्षाओं को अमलीजामा पहनाने की शुरुआत कर दी थी. मुस्लिम लीग को और बढ़वा और प्रश्रय देने के पीछे ब्रिटिश सरकार का अपना स्वार्थ निहित था. ब्रिटिश सरकार पहले ही 'फूट डालो और राज्य करो' की कुटिलनीति के तहत अपना शासन कायम रखने के लिए सांप्रदायिकता को बढ़ावा देकर विभाजनकारी विचारधारा का बीज बो चुकी थी. सन् 1947 का भारत विभाजन भारत और पाकिस्तान, दोनों ही मुल्कों की एक बड़ी आबादी के लिए आज भी दु:स्वप्न बनकर उनकी स्मृतियों में जिंदा है. यह इस भूखंड के इतिहास की एक अविस्मरणीय त्रासदी थी. विभाजन के इस दौर में हम प्रत्यक्ष रूप से मानवीय मूल्यों एवं चेतना को छिन्न-भिन्न होते देख सकते हैं. व्यक्ति और समाज के स्तर पर इतनी बड़ी दुर्घटना जिसने व्यापक स्तर पर लोगों को सदियों तक प्रभावित किया

विराट मानवीय त्रासदी के कई सारे आयाम रहे हैं जो बीत कर भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुए हैं. विभाजन की त्रासदी एक अनवरत चलने वाली मानवीय त्रासदी है जो भिन्न-भिन्न कालखंडों में सरहद के दोनों ओर गुस्सा, शोक, नफरत और अफसोस की लकीरें बनाती चल रहीं हैं. और इस अर्थ में खुद बीत कर भी और नई-नई त्रासदियों को जन्म देती जा रही है.

विभाजन से सम्बंधित घटनाक्रमों का सविस्तार वर्णन तत्कालीन ब्रिटिश पत्रकार और इतिहासकार लियोनार्ड मोसली ने अपनी पुस्तक द लास्ट डेज ऑफ द ब्रिटिश राज में किया है. यानी भारत विभाजन के लिए मुस्लिम लीग और जिन्ना तो उतावले थे ही साथ ही पंडित नेहरू की भी भूमिका संदिग्ध और विभाजन के पक्ष में ही स्पष्ट प्रतीत होती है. उस समय कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा भारत विभाजन की माउंटबैटन योजना को स्वीकार करने की तैयारियों का महात्मा गांधी ने भी विरोध किया था. लेकिन उनकी आगे नहीं चली और 3 जून 1947 को पंडित नेहरू की अगुवाई में कांग्रेस ने अंग्रेजों के विभाजन प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया. उन्होंने इस सन्दर्भ में मनु गांधी से 1 जून 1947 को चर्चा की थी.

धर्म हमें अपनापन और विविधताओं को अपनाना सिखाता है

समाज में शांति बनाए रखने में धर्म की महत्वपूर्ण भूमिका

कृष्णमोहन झा
राजनीतिक विश्लेषक

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने हिंदू धर्म को हमेशा मानव धर्म के रूप में परिभाषित किया है । जब वे अपने विद्वतापूर्ण व्याख्यानों में धर्म की सूक्ष्म विवेचना करते हैं तो उसमें कर्त्तव्य पालन का भाव प्रमुखता से उभर कर सामने आता है । संघ प्रमुख मोहन भागवत के अनुसार धर्म का अर्थ केवल ईश्वर की उपासना नहीं है बल्कि यह व्यक्ति के जीवन में अलग अलग रूपों में सामने आता है और उसके अनुरूप आचरण करने के लिए प्रेरित करता है। संघ प्रमुख ने नागपुर में धर्म जागरण न्यास के नवनिर्मित कार्यालय के उदघाटन समारोह में मुख्य अतिथि की आसंदी से दिए गए अपने सारगर्भित उद्बोधन में भी धर्म की अवधारणा को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि मातृत्व धर्म , पितृ धर्म , मित्र धर्म, पुत्र धर्म,राजधर्म , प्रजा धर्म, ये सभी धर्म हैं । जो इन्हें निष्ठा पूर्वक निभाता है वहीं सच्चा धार्मिक है। भागवत ने कहा कि धर्म का कार्य समाज के लिए होता है। धर्म ठीक रहने से शांति सद्भाव का वातावरण बना रहता है समाज में कलह और विषमता नहीं होती है । भागवत ने जोर देकर कहा कि धर्म का पालन करने वाला व्यक्ति जीवन में सही मार्ग पर चलता है। धर्म के मार्ग पर चलने से व्यक्ति को संकट के समय साहस और रास्ता खोजने का संकल्प मिलता है। भागवत ने कहा कि यह सुनिश्चित करना समाज का दायित्व है कि लोग धर्म के मार्ग से न कभी विचलित न हों। भागवत ने अपनी इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि यदि आपका धर्म के प्रति समर्पण दृढ़ है,आपकी तो आप कभी साहस नहीं खोएंगे ।संघ प्रमुख ने कहा कि आज दुनिया को ऐसे धर्म की आवश्यकता है जो विविधताओं को अपनाने में समर्थ हो। उन्होंने इस संदर्भ में हिंदू धर्म का उल्लेख करते हुए कहा कि हिंदू धर्म हमें अपनापन और विविधताओं को अपनाना सिखाता है। हिंदू धर्म को सच्चे अर्थों में मानव धर्म है जिसे सबसे पहले हिन्दुओं ने समझा और अपने आचरण में उतारा। भागवत ने कहा कि धर्म का कार्य हमेशा पवित्र होता है। हम भारत के लोग जिसे धर्म कहते हैं वह सत्य है। आप उसको मानो या न मानो लेकिन उसका अस्तित्व है। इस संदर्भ में भागवत गुरुत्वाकर्षण का उदाहरण देते हुए कहा कि आप उसको मानो या न मानो वह काम करेगा ।उसको मानकर आप चलेंगे तो आप अच्छी तरह चल सकेंगे लेकिन अगर आप यह तय कर लेंगे कि उसे नहीं मानना तो हो सकता है कि आपको ठोकर लग जाए।

मोहन भागवत ने कहा कि दुनिया के लोग कहते हैं कि हम अलग हैं ।हमें एक होने के लिए एक सा होना पड़ेगा। हम कहते हैं कि हम विविध हैं लेकिन एक दूसरे से अलग नहीं हैं । सत्य यही है कि हम अलग दिख सकते हैं परन्तु एक हैं। संघ प्रमुख ने इस बात को रेखांकित किया कि हमारा धर्म अपनापन सिखाता है और विविधताओं को अपने अंदर समाहित करने की अनुमति देता है। संघ प्रमुख ने कहा कि सबका मार्ग अलग-अलग हो सकता है लेकिन गंतव्य एक ही है इसलिए अपने रास्ते पर तो चलें परन्तु दूसरे के रास्ते को जबरदस्ती बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। संघ प्रमुख ने इतिहास के पन्नों में दर्ज उन प्रेरक घटनाओं का उल्लेख भी किया जब लोगों ने धर्म रक्षा के लिए हंसते-हंसते बलिदान दे दिया लेकिन अपने धर्म के मार्ग पर अडिग रहे। इसी संदर्भ में भागवत ने छत्रपति संभाजी महाराज के जीवन पर आधारित फिल्म छांवा का विशेष रूप से उल्लेख किया।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने श्रावण मास के दौरान नागपुर के एक प्रसिद्ध शिवमन्दिर अभिषेक और पूजा के बाद वहां उनके उद्गार सुनने के लिए बड़ी संख्या में आए श्रद्धालुजनों को संबोधित किया। अपने उद्बोधन में संघ प्रमुख ने अपनी इस बात को विशेष रूप से रेखांकित किया कि भारत अपने धर्म और अध्यात्म के बल पर विश्व गुरु बनने के मार्ग पर तेजी से अग्रसर है। संघ प्रमुख ने कहा कि दुनिया में कई अमीर देश हैं ।हमारा देश भी दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है परन्तु भारत को विश्व गुरु का गौरव दिलाने में धर्म और अध्यात्म की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इस क्षेत्र में हमारा देश इतना समृद्ध है कि सारी दुनिया हमारे पास आती है और हमारी आध्यात्मिक संपदा को नमस्कार करती है ।भागवत ने कहा कि सभी के साथ अच्छाई बांटने और दूसरों के लिए जीने की भावना भारत को महान बनाती है। हमारे पास जो जो सदगुण, शक्ति और बुद्धि है उसका उपयोग दूसरों की भलाई के लिए होना चाहिए। संघ प्रमुख ने कहा कि कट्टरता इंसान के अंदर घृणा और क्रोध को जन्म देती है जो आगे चलकर युद्ध और लड़ाई का कारण बनती है। दुनिया की सभी समस्याओं की जड़ इंसान की प्रकृति है जो मौजूद पांच छह प्रवृत्तियों में छिपी हुई है।

पाक को धूल चटाई लेकिन

अब एयरफोर्स की ताकत बढ़ानी होगी

भारतीय वायुसेना ने ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तानी एयरफोर्स को किस तरह धूल चटाई, इसका पूरा सबूत जुटाकर 4 महीने बाद वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल एपी सिंह ने दावा किया कि पाकिस्तान के 5 फाइटर जेट व शीघ्र पूर्व चेतावनी देने वाला अवाक्स विमान भारत ने मार गिराया. पाकिस्तान ने 7 व 8 मई को भारी ड्रोन हमला किया था. भारत के एस-400 एयर डिफेंस सिस्टम ने पाकिस्तान के अवाक्स विमान को 300 किलोमीटर दूर से निशाना बनाकर ध्वस्त कर दिया. भारतीय वायुसेना ने अपने सुखोई, मिराज और राफेल विमानों से ब्रम्होस, हैमर, स्काल्प व रैम्पेज मिसाइलों का इस्तेमाल कर पाकिस्तान के मुरीदके और चकलाला कमांड केंद्रों तथा सरगोधा व नूरखान एयरबेस, हैंगर व शस्त्र भंडार को तबाह किया. वहां खड़े एफ-16 व कुछ अन्य विमान भी नष्ट या क्षतिग्रस्त हुए. इस लड़ाई में दोनों पक्षों ने गहन घनत्व की इलेक्ट्रो मैगनेटिक जानकारी का एक-दूसरे के खिलाफ इस्तेमाल किया. पाकिस्तान ने चीन के ऊंचे दर्जे के हथियारों व नेटवर्क को आजमाया. वह उच्च तकनीक वाला युद्ध था जो 80 से 90 घंटे चला. पाकिस्तान को पता चल गया कि लड़ाई जारी रही तो भारत उसे और अधिक नुकसान पहुंचा सकता है, इसलिए उसने भारत के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन्स (डीजीएमओ) को संदेश भेजा कि वह बातचीत करना चाहता है जिसे स्वीकार किया गया. भारत का उद्देश्य आतंकियों को सबक सिखाना था. वह लगातार युद्ध की स्थिति में नहीं रहना चाहता था. इस संघर्ष के बाद जरूरी हो गया है कि भारत अपनी वायुसेना को और आधुनिक बनाए. स्क्वाड्रन की तादाद शीघ्रता से बढ़ाए. अधिक विमान और ऊंचे दर्जे के लड़ाकू ड्रोन जुटाए. सैम-2 व 8 तथा एल-70 व पुरानी गन को हटाकर क्लोज इन वेपन सिस्टम व रॉकेट का इंतजाम करे. चीन के जे-10 और जेएफ-17 विमानों का इस्तेमाल पाकिस्तान ने किया था. इसे देखते हुए 114 मल्टी रोल फाइटर एयरक्राफ्ट हासिल करना आवश्यक है. इजराइल निर्मित हैरोप व हार्पी जैसे ड्रोन हमारे लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

संजय राऊत, कपिल सिब्बल को शक कहां गायब हुए जगदीप धनखड़

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, जब कोई नेता अचानक निगाह से ओझल हो जाए तो चिंता हो जाती है कि कहां गया? विपक्ष को फिक्र है कि पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ कहां लापता हो गए? शिवसेना (उद्धव) के सांसद संजय राऊत ने सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि जिस तरह रूस और चीन में नेताओं को रहस्यमय ढंग से अचानक गायब कर दिया जाता है, वैसा कहीं यहां भी तो नहीं किया गया? 21 जुलाई को सुबह धनखड़ राज्यसभा में हमारे सामने थे. शाम को उनके इस्तीफे की खबर आई. तब से वह कहां हैं? उनका स्वास्थ्य कैसा है? वह किसके साथ हैं इसकी कोई जानकारी किसी को नहीं है?

हमने कहा, ऐसी शंका-कुशंका नहीं करनी चाहिए. मन में विश्वास रखना चाहिए कि धनखड़ जहां भी होंगे, सकुशल होंगे. हो सकता है कि या तो वह अंतर्धान हो गए होंगे या फिर वह खुद ही अज्ञातवास में चले गए होंगे. यह हमारे देश की पुरानी परंपरा रही है. पांडवों ने 12 वर्ष का वनवास और फिर 1 वर्ष का अज्ञातवास किया था.

अज्ञातवास के दौरान वह पांचों भाई वेष बदलकर राजा विराट के यहां रहने लगे थे. युधिष्ठिर राजा विराट के साथ चौसर खेलते थे. भीम रसोइया बनकर खाना बनाने लगे थे. अर्जुन ने बृहन्नला या डांस मास्टर बनकर विराट की बेटी उत्तरा को नृत्य सिखाना शुरू किया था.

नकुल-सहदेव ने राजा विराट के घोड़ों की देखभाल शुरू की थी. इसी तरह जगदीप धनखड़ भी अज्ञातवास में रहकर कुछ न कुछ खटपट कर रहे होंगे. बाद में वह खुद सामने आ जाएंगे. पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, यह मामला काफी गंभीर है. राज्यसभा सांसद और वरिष्ठ वकील कपिल सिब्बल ने भी धनखड़ के बारे में चिंता जताते हुए कहा कि 22 जुलाई को उन्होंने उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दिया और अभी तक उनकी कोई जानकारी नहीं है. हमने तो लापता लेडीज के बारे में सुना था लेकिन लापता वाइस प्रेसीडेंट के बारे में पहली बार अनुभव आया है. न उनका लोकेशन पता है, न उनसे किसी की बातचीत हुई है. सिब्बल ने सरकार पर फिकरा कसते हुए कहा कि आप बांग्लादेशियों को तो एक जगह से दूसरी जगह तक खोज लेते हैं. हमें यकीन है कि आप धनखड़ को भी खोज लेंगे.

हमने कहा, धनखड़ न तो सरकार के खिलाफ कुछ बोलना चाहते हैं और न विपक्ष के जाल में फंसना चाहते हैं इसलिए परदे के पीछे चले गए हैं. वह मोदी सरकार के पक्ष में तब से वफादारी दिखा रहे थे जब वह बंगाल के गवर्नर थे. राज्यसभा के सभापति के तौर पर उन्होंने विपक्ष का प्रस्ताव चर्चा के लिए स्वीकार कर लिया. इसलिए सरकार ने उनसे इस्तीफा ले लिया. धनखड़ जाट हैं, इसलिए हरियाणा जैसे जाटलैंड में ही कहीं छिपे होंगे.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11992 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■		■	8		
	■	9		■		■	
■	10	■	11				■
12		13	■		■		14
15			■	16	■	17	
18		■	19		20		
	■	21				■	

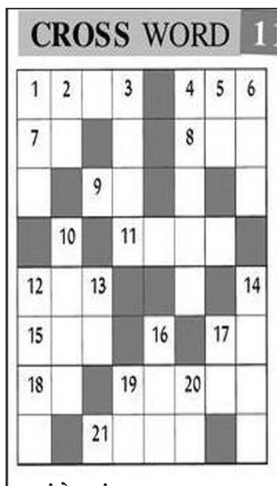

बाएं से दाएं

1. नंदवंशीय अंतिम सम्राट महानंद का प्रधानमंत्री जिसे अपनी ओर करके चाणक्य ने नंदवंश का नाश किया 4. दुनिया, जगत 7. समय का एक लघु विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है 8. वायु द्वारा उत्पन्न (सं.) 9. अवसर, वह स्थान जहां पर कोई घटना घटी हो 11. दानेदार, शुभचिंतक (उर्दू) 12. उज्वल, स्वच्छ, सफेद 15. पानी निकाला हुआ दही, फाड़ कर जमाया हुआ दूध 17. मास, महीना 18. राष्ट्र, मुल्क 19. शहर में रहने वाला (उर्दू) 21. देवता या बड़ों के प्रसन्न होने पर कोई अभीष्ट वस्तु या सिद्धि प्रदान करना

ऊपर से नीचे

1. कसम, सौगंध, प्रतिज्ञा (सं.) 2. यंत्र, मशीन, बीता हुआ या आने वाला दिन 3. रथ बनाने वाला 4. संवाद या समाचार देने वाला, वह जो किसी विशेष स्थान से समाचार लिखकर समाचार पत्र में छपने के लिए भेजता हो 5. सप्ताह के कुल दिनों की संख्या 6. चांदी (सं.) 10. चंद्रमा (सं.) 12. शिक्षा, नसीहत (सं.), 13. लुआब, मुंह से निकलने वाला थूक 14. भय या शीत से कांपना, थर्राना 16. पद 17. स्त्री जाति का प्राणी या जीव 19. बाण, सरकंडा (सं.) 20. रण, युद्ध, जंगल

Solution 11991

रो	मां	चि	त	■	■	ना	शी
म	द	■	■	हि	रा	स	त
कु	■	म	हि	मा	■	दा	ल
प	ला	श	■	ल	ल	न	■
■	स	हू	लि	य	त	■	क
म	क	र	■	■	खो	ख	ला
ही	■	■	अ	स	र	दा	र
न	त	म	स्त	क	■	न	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र अथवा व्यक्ति विशेष का सहयोग मिलेगा, स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा, शासन से लाभ प्राप्त होने का योग है, वर्ष के मध्य में शत्रु वर्ग प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, मित्रों का सहयोग रहेगा, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, वर्ष के अन्त में व्यर्थ वाद विवाद से बचने का प्रयास करें, यात्रा में कष्ट होगा, शारीरिक चिन्ता और मानसिक कष्ट होगा, पारिवारिक परेशानी में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों के लिये शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा, भोग विलास में धन व्यय होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्वजनों से मतभेद हो सकता है, मान सम्मान के प्रति सतर्क रहें, कर्क राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता में संलग्नता रहेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नौकरी में परेशानी के बाद लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुखी, शरीर से कोमल तथा भावुकता होगा. अपनी इच्छानुसार कार्य करेगा. दूसरों को अपनी ओर शीघ्र ही आकर्षित करेगा. प्रवास आदि का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

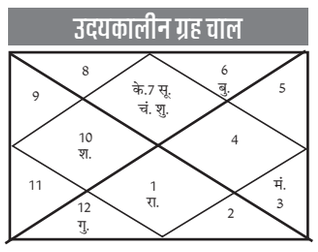

पंचांग

रा.मि. 22 संवत् 2082 भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी बुधवासरे दिन 7/55, उत्तराभाद्रपद नक्षत्रे दिन 12/49, धृति योगे रात 7/9, बालव करणे सू.उ. 5/31 सू.अ. 6/29, चन्द्रचार मीन, शु.रा. 12, 2, 3, 6, 7, 10 अ.रा. 1, 4, 5, 8, 9, 11 शुभांक- 5, 7, 1.

मेष- किसी अचल संपत्ति के क्रय हेतु प्रयत्न तीव्र होगा सामाजिक व्यस्तता रहेगी. साहस एवं पराक्रम में वृद्धि होगी. यश कीर्ति मिलेगी. कामकाज पूरा होगा.

वृषभ- महत्वपूर्ण दायित्वों की पूर्ति हेतु प्रयत्न तीव्र होगा. अभिभावकों से मतभेद हो सकते है. वाहन मशीनरी आदि के कार्यो में सावधानी रखें.

मिथुन- रोजगार के क्षेत्र में अपनी क्षमता का पूर्ण लाभ उठायेंगे. पारिवारिक कार्य बनेंगे. परिवार में मतभेदों में वृद्धि होगी. दूसरों के कारण परेशानी हो सकती है.

कर्क- संबंधों में आपका मन भावनात्मक आपूर्ति पर केन्द्रित होगा. किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना होगा. समय को देखकर कार्य करें. मित्रता उपयोगी रहेगी.

सिंह- निर्णय लेने में जल्दबाजी न करें. प्रशानिक व्यस्तता बढेगी. मन प्रसन्न रहेगा. व्यवसाय को बढ़ाने का प्रयास करें. अनावश्यक विवादों को टालना हितकर.

कन्या- प्रियजनों का सानिध्य प्राप्त होगा. नई सफलता के अवसर मिलेंगे. खरीदी बिक्री के कार्यो में सर्तकता बांछनीय है. संतान सुख का योग बनेगा.

तुला- आकस्मिक ढेर सारे तनाव मन पर हावी रहेंगे. निराशावादी विवादों को त्यागें. धार्मिक कार्यो में व्यय होगा. आर्थिक कार्यो में मनोनुकूल सफलता प्राप्त होगी.

वृश्चिक- आशावादी बनें. नाजुक संबंधों में भावनात्मक कष्टों को भूलवर्तमान को बेहतर बनायें. नौकरी एवं राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी. मन में संतोष बना रहेगा.

धनु- मन धनागम की नई युक्तियों की ओर केन्द्रित रहेगा, कार्य क्षेत्र में किसी सहकर्मी से मतभेद होगा. किसी समस्या का समाधान होगा.

मकर- जीवनसाथी का स्नेहात्मक सहयोग प्राप्त होगा. आलस्य का त्याग करें. कार्यो में सावधानी रखें. मन में तनाव रह सकता है. आर्थिक चिन्ता रह सकती है.

कुम्भ- मन पर नियंत्रण रखें. अपने कर्त्तव्यों के प्रति केन्द्रित हों. अत्याधिक विश्वास करना हानिप्रद रहेगा. किसी व्यक्ति से विवाद हो सकता है. पुरूषार्थ बना रहेगा.

मीन- किसी नये संबंध के प्रति मन केन्द्रित होगा. थोड़ा संयमी और धैर्यवान बनें. कुटुम्बियों के मामले में सावधानी रखें. विवाद की स्थिति न आने दें.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी को उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, अलसी, सरसों, अरंडी, बिनौला, मूँगफली, घी, तेल, में तेजी, का रूख रहेगा. रूई, कपास, से बनी वस्तुओं में तेजी होगी. भाग्यांक 7579 है.

SUDOKU 7124

3				8				9
		8	6		9	5		
6	5			4			7	1
	4						2	
1	2			6			9	8
		6	4		5	8		
9				1				7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7123

8	2	4	3	9	7	5	1	6
3	5	6	1	4	2	7	8	9
1	9	7	6	5	8	2	3	4
9	6	2	5	8	3	1	4	7
5	3	1	4	7	9	8	6	2
4	7	8	2	1	6	9	5	3
2	8	3	9	6	1	4	7	5
6	1	5	7	2	4	3	9	8
7	4	9	8	3	5	6	2	1